साहित्य अकादेमी में हिंदी पखवाड़े के दौरान गजल संध्या का आयोजन

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा मनाए जा रहे हिंदी पखवाड़े के दौरान अनेक कार्यक्रमों के साथ ही राजभाषा मंच के अंतर्गत गजल संध्या कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें बीके वर्मा शैदी, कमलेश भट्ट कमल, मीनाक्षी जिजीविषा एवं ओमप्रकाश यती ने अपनी-अपनी गजले प्रस्तुत कीं। सर्वप्रथम मीनाक्षी जीजिविषा ने अपनी गजलें प्रस्तुत कीं। उनका एक शेर था कमरा, खिड़की और दीवारों दर सुनते हैं, पत्थर के रोने को केवल पत्थर सुनते हैं। ओमप्रकाश यती ने सोचो ऐसा कर पाना आसान है क्या, और दर्द छुपाकर मुस्कराना आसान है क्या शेर सुनाया। कमलेश भट्ट कमल की एक गजल का शेर था लोगों में अंग्रेजियत के सौ असर मौजूद हैं, हां गुलामी के हस्ताक्षर अभी भी मौजूद हैं। अंत में वरिष्ठ रचनाकार बीके वर्मा शैदी ने अपनी बात कही बौनों की बस्ती में हम ऊंचाई की बाते करते हैं। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के उपसचिव प्रशासन कृष्णा किंबहुने ने अतिथियों का स्वागत अंगवस्त्रम पहनाकर किया। अकादेमी के कर्मचारियों के लिए हिंदी साहित्य प्रश्नोत्तरी एवं श्रुत लेख प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं के संचालक क्रमश अशोक मिश्र एवं मनोज मोहन थे।

खिड़की और दीवारों दर सुनते हैं/ पत्थर के रोने को केवल पत्थर सुनते हैं।